आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date:27-01-15

हम भाग्यशाली आत्माओं को ज्ञान और योग की शिक्षा देकर आधाकल्प के लिए सच्चा स्वर्गीय सुख की प्राप्त कराने वाले, दुख हर्ता - सुख कर्ता, लिबरेटर बाप ने कहा, मीठे बच्चे - यह सृष्टि रंगमंच हार और जीत, दुख और सुख का सारा खेल है, बाप दुख से लिबरेट करते हैं, इसलिए बाप को लिबरेटर कहा जाता है.

द्वापर से आधाकल्प हम आत्मायें जिसको ढूंढते थे. भक्ति में गाते भी थे - हे ईश्वर, हे परमात्मा, दुख हर्ता सुख कर्ता आओ. आकर हमें दुखो से मुक्त करो. लेकिन यह जानते नहीं थे कि हमें दुख देने वाले तो यह विकार हैं. अब संगमयुग पर परमात्मा ने आकर हमें सही समझ दी की आत्मा दुख क्यों भोगती है और आत्मा फिर से सुखी कैसे बन सकती हैं.

बाबा हमें हर रोज की मुरली से तीन मुख्य बातों का ज्ञान देते है - आत्मा का, परमात्मा का और सृष्टि चक्र का. यह तीन बातों का ज्ञान बाबा की श्रीमत् अनुसार धारण करने से ही आत्मा सर्व दुखो से मुक्त हो सकती हैं और अभी संगमयुग में ही जीवनमुक्त स्थिति का अनुभव कर सकती हैं. आज की मुरली से यह तीन बातों के ज्ञान पर कहे गये महा-वाक्यों को फिर से बाबा की याद में रहकर पढ़ेंगे.

आत्मा और परमात्मा पर कहे गये महा-वाक्यों --

- बाबा कहते हैं ॐ शांति का अर्थ है - मैं आत्मा हूँ, मेरा स्वधर्म शांत है. बाप ने सिखलाया है कि और सबकी याद छोड़ मुझे याद करो तो पतित से पावन बनेंगे. आत्मा के पतित बनने के कारण शरीर भी पतित बना है. अब फिर आत्मा को पावन बनना है. तुम्हारी आत्मा पावन बनेंगी पतित-पावन बाप की याद से. वह है सभी आत्माओं का बाप. गॉड फादर परमपिता परमात्मा अर्थात सुप्रिम सोल, वह निराकार है.

- बाबा कहते हैं भले सब कहते है आत्मा और शरीर है, आत्मा छोटा स्टॉर मिसल है परन्तु इतनी छोटी आत्मा में ८४ जन्मो का पार्ट नूंधा हुआ है - यह तुम्हें अभी ही मालूम पड़ता है.

अब तुम जानते हो हम आत्मायें घर से यहाँ इस माण्डवे अथवा नाटकशाला में आई हैं पार्ट बजाने. तुम्हारा असली घर है शांतिधाम. वह है रुहानी बाप का घर, जहाँ सब आत्मायें भी रहती हैं.

- बाबा कहते हैं पतित-पावन एक परमपिता परमात्मा को ही कहा जाता है. आत्मा बिन्दी है. यह बात औरों को भी समझानी है ताकि अपने को आत्मा समझ पतित-पावन बाप को याद करें, वह है परमात्मा. परमात्मा कि एक्यूरेट याद से ही आत्मायें पावन बनेगी.

- बाबा कहते हैं बाप को कहते भी है लिबरेटर, परन्तु कब और कैसे लिबरेट करते यह नहीं जानते. बाप को ही दुख हर्ता सुख कर्ता कहते हैं ना. तो जरूर आकर दुख से लिबरेट कर और फिर सुख में ले जायेंगे.

- बाबा कहते हैं मैं कल्प-कल्प, कल्प के संगम पर आता हूँ. मैं तुमको सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का सारा ज्ञान सुनाता हूँ. मैं ही नॉलेजफुल हूँ. मैं ही मनुष्य सृष्टि रुपी झाड़ का चैतन्य बिजरुप हूँ, इसलिए मेरे में सृष्टि रुपी झाड़ के आदि-मध्य-अन्त की सारी नॉलेज हैं. मैं ही सत्य हूँ.

- बाबा कहते हैं अभी तुम समझते हो आत्मा में ही संस्कार हैं. आत्मा बोलती, सुनती है आरगन्स द्वारा, परन्तु मनुष्यों को यह पता न होने के कारण देह-अभिमान में आकर बात करते हैं. बाप कहते है अपने को आत्मा समझ मुझको याद करो.

<u>सृष्टि चक्र पर कहे गये महा-वाक्यों</u> ---

- बाबा कहते हैं यह खेल ही सुख और दुख, हार और जीत का है. हार से बादशाही गंवा देते हैं. यह भी भारतवासियों को पता नहीं है कि हम बादशाह थे फिर कैसे राज्य गंवाया है. यह तो ५ हजार वर्ष की बात है. सतयुग में इन लक्ष्मी-नारायण का राज्य था फिर कहाँ गया, क्या हुआ - यह भी अभी तुम समझते हो. आत्मा को सतोप्रधान से सतो, रजो, तमो में आना पड़ता है.

- बाबा कहते हैं अब है संगमयुग जबकि पुरानी कलयुगी दुनिया बदलकर नई सतयुगी दुनिया स्थापन होती हैं. सारे कल्प में आत्मायें सीढ़ी उतरते आये हैं, कला कम होती जाती है, सुख से दुख में आना होता हैं. अब यह है कल्याणकारी संगमयुग जिसमें आत्मायें वापिस सतोप्रधान बनती हैं. यह बाते बुद्धि में धारण करनी है.

- बाबा कहते हैं यह सबको बतलाओ कि बाप आया हुआ है, जिसे दुख में याद करते हैं - ओ गॉड फादर! स्वर्ग का वर्सा बाप ही आकर देते हैं. पुकारते भी उनको हैं - हे भगवान, हे राम! मरने समय भी उनको याद करते हैं. अभी तुम भी कहते हो - भगवान को याद करो. यह अन्तिम जन्म गृहस्थ व्यवहार में रहते कमल फूल समान पवित्र बनो तो पवित्र दुनिया के मालिक बनेंगे. अमरलोक है पवित्र लोक. यह है मृत्युलोक, अपवित्र लोक. जो ब्राह्मण कुल भूषण हैं वह जानते हैं हम देवता थे फिर क्षत्रिय बनें. अब ब्राह्मण बनें हैं फिर सो देवता बनेंगे.

ॐ शांति.